अन्तरा-शब्दशक्ति

अंजुरि भर प्रेम

(काव्य संग्रह)

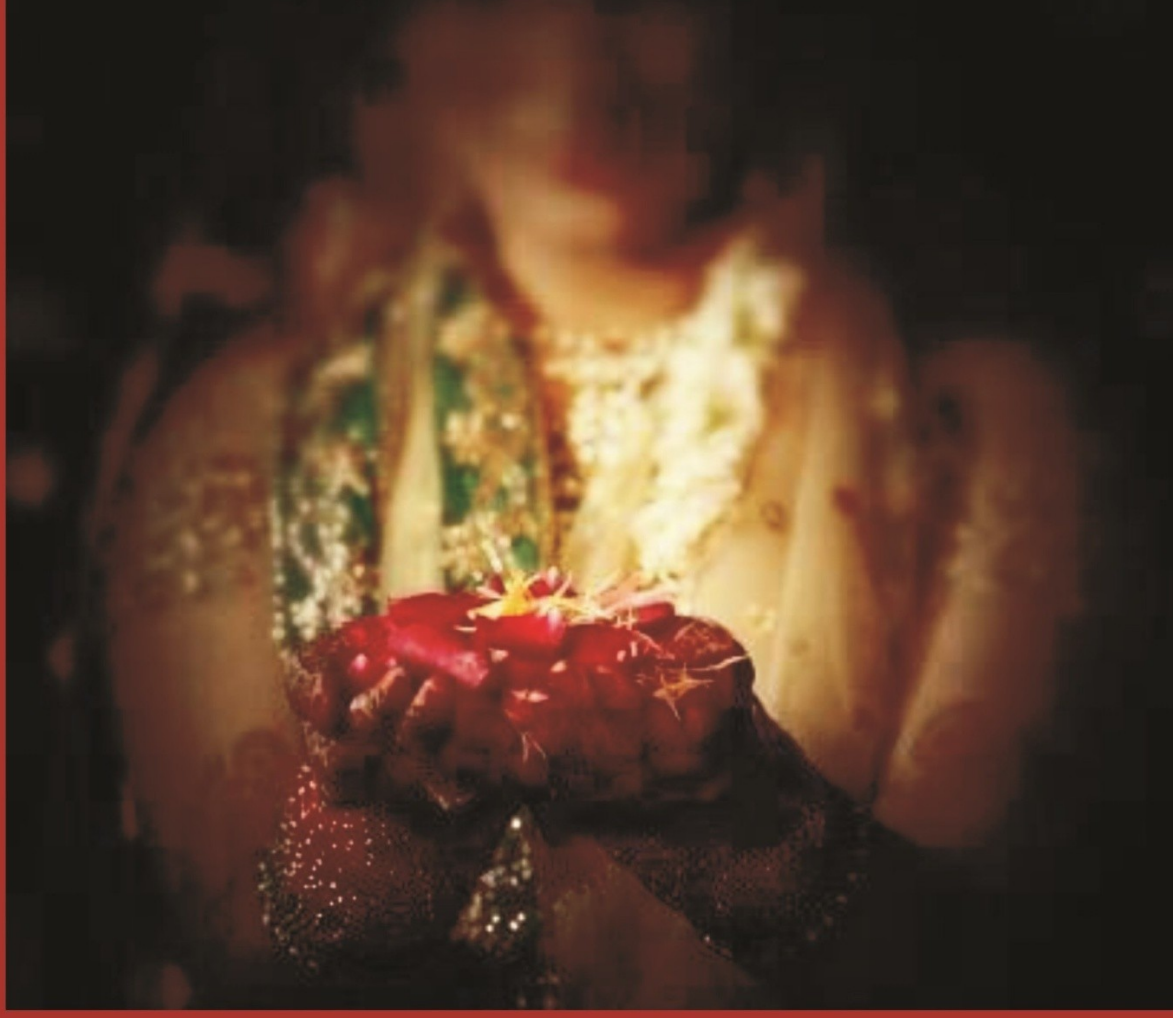

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अंजुरि भर प्रेम

(काव्य संग्रह)

कमलवीथि पुष्प - 12

डॉ० भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-93-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९

(मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१९- डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

आवरण चित्र- उर्वशी बौड़ाई

मूल्य - ६०.०० रुपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

ANJURI BHAR PREM BY DR BHARATI VERMA BAURAI

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

समर्पण	5	तुम	11
प्रेम के विभिन्न स्वरूप	5	जादू	11
अनकहा अहसास	7	मन चाहता है...	12
प्रतीक्षा	8	प्रेम में डूबी स्त्री	12
आ रहे तुम	8	प्रेम का अर्थ	12
परिपक्व प्रेम	8	प्रेम करना	13
कुछ सुना?	8	प्रेम में...	13
आराध्य	9	प्रेम में स्त्री	14
शाश्वत रहे	9	वही प्रेम है	15
बावरा मन	9	अभी तक अटका है	16
तेरे नाम लिखेंगे	10	कारण	16
प्रेम रंग	10	क्या करूँ?	17
कबीर जैसा	11	पुकारो	17
कुछ....	11		

अनछुए अहसास	17	मीत!	24
घर	18	जोड़ियाँ	24
खाई	18	आ रहा कोई	25
स्मृतियाँ प्रेम की	18	प्रेम यात्रा	25
अब की बार	19	सुनना तो जरा	25
मैं हूँ ना!	19	करवाचौथ पर	26
हथेली पर	19	सुनो चाँद!	27
गुलाब दिवस	20	अटका है..!	27
सफ़र जारी है मीत	21	प्रेम में डूबी स्त्री	28
चढ़ती उमर का प्रेम	22	तुम!	28
कहाँ से!	22	चढ़ती उमर का प्रेम	29
मुक्ति धाम	23	भीगना	29
बिरवा	23	विश्वास	29
कुछ तेरी :: कुछ मेरी	23	टटोलें	29

तू और मैं 30
समुद्र 31
ढाई अक्षर

प्रेम में शब्द
31
प्रेम कभी नहीं मरेगा 32

समर्पण

मेरी माँ और पापा को जिन्होंने जन्म ही नहीं दिया,
बल्कि मेरे व्यक्तित्व को सँवार, निखारकर
इस संसार में रहने योग्य बनाकर
प्रेम के निश्छल रूप से परचित करवाया।
जो मेरे आदर्श, मित्र, सखा, सहचर व मार्गदर्शक हैं।

प्रेम के विभिन्न स्वरूप

बालक जैसे-जैसे बड़ा होता है वह मोह वश अपने-पराये का भेद करता है और बड़े होने पर अभिरुचियों के प्रति प्रेम, देश, अपने मत-विचार, संप्रदाय, समाज, भाषा, रीति-रिवाज, संस्कार आदि से प्रेम होता है। बचपन के मोह छूट जाते हैं।

इसके बाद निश्छल प्रेम की बारी आती है और निश्छल प्रेम का परकतीकरण तभी सम्भव होता है जब व्यक्ति किसी के संपर्क मेंआकर लगाव अनुभव करता है और यहीं वह अनुभव करता है कि उसका लगाव स्वार्थ पर आधारित ना हो। यह प्रेम भी सांसारिक होता है। उदाहरणार्थ पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका और मित्रों का प्रेम आदि।

इन सभी प्रकार के प्रेमों का अनुभव करने के पश्चात् मनुष्य ईश्वरीय प्रेम की ओर प्रवृत्त होता है। ये प्रेम सर्वोच्च श्रेणी में रखा जासकता है जिसमें किसी भी प्रकार का स्वार्थ, लगाव, मोह, राग-द्वेष नहीं होता है।

अंततः सभी प्रकार की सांसारिक वस्तुओं, भावनाओं और इच्छाओं से ऊपर उठ जाता है। हम इसे मनुष्य की प्रेम यात्रा कह सकते हैं जोपरमात्मा में विलीन होकर समाप्त होती है।

अंजुरि प्रेम से भरी हुई है.. उसमें से एक-एक बूँद प्रेम की जब मिलती है तो देखते ही देखते वह नद में परिणत हो जाती है। जिसे प्रेममिलता है वह भी आसमान में उड़ा फिरता है जो प्रेम करता है वह तो उसमें सराबोर रहता ही है।

प्रेम अपनी कभी समाप्त न होने वाली यात्रा में विभिन्न पड़ावों से गुजरता है। उसमें वह उल्लसित होता है, टूटता है, तिरस्कृत होता है,बनता है, मिटता है, काँटों से लहूलुहान होता है पर मरता नहीं। वह हृदय की बंजर पड़ी वसुधा पर भी खिलने की क्षमता रखता है.... यही प्रेमकी सार्थकता है और विशेषता भी। प्रतिदान की चाह रखने वाला प्रेम कर ही नहीं सकता। अपनी अंजुरि में भरे प्रेम की एक-एक बूँद कोनिस्वार्थ

होकर बाँटते जाइए। स्वयं देखियेगा....जितना बाँटेंगे उससे कहीं अधिक लौट कर आपके पास आयेगा।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अनकहा अहसास

भोर की ओस सा पारदर्शी
अनकहा अहसास सा मेरा प्रेम
तुम्हें छिपा लेना चाहता है
अपने मन की गहराइयों में,
पर चाहता भी है कुछ अनोखा सा...
चलें साथ हर उस जगह पर
जहाँ मेरा मन हो आता है अकेले तुम्हारे बिना,
जियें साथ वो हर पल
जिसे सोचती और जीती हूँ
अपनी कल्पनाओं में,
कभी हँसे, खिलखिलाएँ यूँ ही
गुनगुनाएँ गीत
उड़ें हवा के साथ पंछियों से
उड़ती तितलियाँ,
चमकते जुगनू भरें हथेलियों में
भीगें बारिश में
सुनें रिमझिम बरसती
बूँदों का मनोरम संगीत
कि बजने लगें मन में मंदिर की घंटियाँ,..
एक बात पूछूँ,
प्रेम में तुम्हें ये स्वीकार्य तो है?
न भी हो तो क्या,प्रेम और दर्द का तो अटूट रिश्ता है न!

प्रतीक्षा

तुम से
अच्छी तो अब
तुम्हारी प्रतीक्षा है
तुम तो
आए और गए
पर यह तो
साथ रहती है सदा।

आ रहे तुम

दूर तक उड़ती धूल
चलती ठंडी हवाएँ
डोलती पेड़ की हर शाख
झूमते पत्ते-पत्ते....
जान गई
आ रहे तुम!
पहुँच गए गंतव्य तक
अब सभी कुछ शांत-संयत,
द्वार हृदय का खुला
आओ निष्कंटक

आराध्य

दूर-दूर तक
फैला आसमान
सिमट आता है जब
तुम्हारी आँखों में
तब प्रेम का
वह भव्य रूप लगता है
रामचरितमानस की
स्वागत तुम्हारा!

परिपक्व प्रेम

अब भी
करती हूँ प्रतीक्षा
उतनी ही उत्कटता से,
पर सिलसिला शिकायतों का
नोक-झोंक का
नहीं रहा अब,
लगता है हमारा प्रेम
परिपक्व हो गया है।

कुछ सुना?

कल चौराहे पर
मर गया प्रेम
किसी का बेमौत,
चलो!
नोक-झोंक
शिकायतों का
सिलसिला चले
अति की परिपक्वता तजें
पुनः नया प्रेम संसार रचें।

चौपाई सा,
गीता के श्लोक सा,
मीरा के भजन सा,
कबीर की साखी सा,
राधा की
निश्छलता सा,
गिरिधर के रूप सा...
और मैं!
तुम्हारी आँखों का
अधरों से स्पर्श कर

अपने
उस आराध्य को
अनायास पा लेती हूँ
जिसे ढूँढते है सब
मंदिर, मस्जिद
चर्च और गुरुद्वारों में।

शाश्वत रहे

प्रेम
धरा-गगन सा
नदी-समुद्र सा
वंशी-अधरों सा
राधा-मोहन सा,
प्रेम मेरा और तुम्हारा
इसी तरह शाश्वत रहे

तेरे नाम लिखेंगे

जितने सूरज उतने सवेरे
तेरे नाम लिखेंगे,
जितनी रातें उतने चंदा
तेरे नाम लिखेंगे,
जितने सुमन मेरी बगिया में
तेरे नाम लिखेंगे,
जितनी आशा मेरे नयन में
तेरे नाम लिखेंगे,
जितना मुझे मिला है जीवन
तेरे नाम लिखेंगे,
जितनी धड़कन मेरे हृदय में
तेरे नाम लिखेंगे,
छोड़ चलेंगे संसार को जब
फिर न कभी दिखेंगे,
अपने छूटे सपने वसीयत में
तेरे नाम लिखेंगे।

हर जन्म के लिए...!!!

बावरा मन

बाहर-भीतर
चल रहा प्रिय
प्रबल झंझावात,
नहीं सूझती राह कोई
होता है संताप,
पर इससे विश्वास बढ़ा
हुआ सुखद अहसास
बावरा मन बस चाहे
तुम्हीं रहो पास
जीवन की
सबसे अनुपम
यही है सौगात!

प्रेम रंग

प्रेम रंग में डूब गई
बारिश से डर कैसा

मुझको ही ले जाए
आए तो कोई ऐसा

मन के तार जुड़ें कभी
वो होगा मंजर कैसा

लगी जिसे प्रेम लगन
हर इंसा है रब जैसा

काँटों की बस्ती में हो

प्रेम प्रेम ही अब ऐसा

दुनिया की इस भीड़ में
लगे न कोई तुम जैसा।

कबीर जैसा

घर तो अपना फूँक दिया
मिला न कोई कबीर जैसा

कृष्ण की आँखें ढूँढ रही
निस्वार्थ प्रेम मीरा जैसा

पराए तो पराए लगते हैं
अपना भी लगे पराये सा

कुछ....

मीत!
कुछ तेरी कुछ मेरी सुनें
मिल कर नए स्वप्न बुनें
संग मिल नई राह चुनें
रंग प्रीत के मिल कर भरें
शब्द गीत के मिल कर ढूँढें
गीत प्रीत का मिल कर गाएँ
दुख-सुख सबके कम हो जाएँ
धीरे-धीरे
हवा बावरी
आँचल में भरें।

तुम

तुम
बरसात में
उफनते नद से
बहो यूँ मुझमें
बाँध संकोच के
टूट कर बिखर जाएँ,
खिल उठे स्वयमेव
इंद्रधनुष प्यार के...!!!

जादू

यह
प्यार का
जादू नहीं तो क्या?
जो कहा नहीं
वो सुन लिया
जो प्रेम पत्र
कभी लिखा नहीं
वो पढ़ लिया,
जो कहा, लिखा
वह अनसुना
अनपढ़ा रह गया।

मन चाहता है...

तुम में
प्रेममय होकर
तुम से तुम तक
लौटने की
इतनी लम्बी यात्रा..!
मन चाहता है
कभी खत्म ही न हो..!!!

प्रेम में डूबी स्त्री

प्रेम में
डूबी स्त्री
अपना सर्वस्व देकर
तिरोहित हो जाती है,
तभी वह
प्रेम में आकंठ डूब कर
प्रेम को जी पाती है,
नहीं सोचती
प्रतिदान/ प्रतिफल के बारे में
जीवन के उत्तरार्ध में
भोगती है एकाकीपन के
दंश की पीड़ा।

प्रेम का अर्थ

प्रेम का
अर्थ यह नहीं
कि घंटों एक-दूसरे की
आँखों में देखते हुए
बेसिर-पैर की बात करें..!

प्रेम का अर्थ
यह भी नहीं
कि सब कुछ छोड़
बेवजह की उलझनों में उलझ
बाहर की नकली दुनिया में
खुशी तलाशने के
दिखावे में जियें...!!

अपनों से दूर
तुम्हारा प्रेम
बाहर बिखर गया है
मेरा प्रेम मेरे साथ
बीहड़ों में भटकता
लहूलुहान हो रहा है
अपने अपने प्रेम की
अपनी अपनी नियति है.....!!!!

प्रेम करना

तुम
पत्तों पर गिरी
ओस की तरह
आर-पार दिखते सा
प्रेम करना
जहाँ कुछ भी
आवरण में रख कर
कहने-सुनने को
कुछ न बचे,
तुम प्रेम करना
सुगंध की तरह
हवाओं के साथ बह कर
सुवासित करना
पूरे ब्रह्मांड को,
प्रेम सीमाओं में नहीं रहता
प्रेम बंध कर नहीं रहता।

प्रेम में...

प्रेम में
स्त्री बाँध लेती है
आँखों पर पट्टी
तभी उसे
आगे-पीछे
दाएँ-बाएँ
अच्छा-बुरा
कुछ नहीं दिखता,
वह तो
प्रेम के
लाल-पीले रंग में
सिर से पाँव तक रंगी
जान ही नहीं पाती
कि प्रेम में अपना
कितना खोया
और क्या पाया...????

प्रेम में स्त्री

प्रेम में
डूबी स्त्री
जब नाराज़ होती है
तो पटकती है
अपना गुस्सा
जब धो रही होती है
वो अपने प्रेमी के कपड़े,
बेतरतीब रखे जूते
रखती है पटक कर
जूतों के स्टैंड में,
गीला तौलिया और
अस्त-व्यस्त रखे
गठरी में बँधे से रखे कपड़े
कर देते हैं क्रोध में
उसके रक्त का बहाव तेज,
दर्द से भन्नाने लगता है
जब सिर उसका
तब एक कोने में
छिप कर बैठा
सब कुछ देख रहा प्रेम
उठ कर हौले से
उसका हाथ पकड़ कर
ले जाता है छत पर,
दूर-दूर तक दिखते
नीले आसमान के नीचे,
धीरे से कानों में
कहता है
प्रिया!
जिस अधिकार में
नाराज़गी न हो
वहाँ प्रेम नहीं टिकता,
रूठने-मनाने का
यह सिलसिला तो
चलता रहेगा
सदाबहार प्रेम
शाश्वत बन
पीले अमलतास सा
सब ओर यूँ ही
बिखरता रहेगा।

वही प्रेम है

जाते जाते बिना कुछ कहे
बस पलट कर देखे
और कह जाए बहुत कुछ
वही प्रेम है...!
झरोखों से झाँकती
छोटी छोटी खुशियों को भी
अपने आँचल में समेट कर
अपने भाग्य पर जो इतराए
वही प्रेम है...!
रसोई में उठती
भुने मसालों की सुगंध के साथ
रचे भोजन का संगीत गुनगुनाते हुए
वही प्रेम है....!
सावन में बरसते
मेह की लय ताल पर
सब कुछ भूल
बूँदों के साथ भीगते हुए
जो नृत्य करे
वही प्रेम है.....!
बिना कहे अपने को बदले बिना
समय पर सब कुछ करते हुए
दिखावे की दुनिया से दूर सँग रह कर
अपने होने का अहसास कराए
वही प्रेम है....!
बीमार माँ, पिता या भाई हो मायके में
तब बेटी का
अपनी दोहरी व्यस्तताओं में से
समय चुरा कर भागते दौड़ते आकर
कुछ बना कर खिलाना
सिर पर हाथ फेरना दुलराना, समझाना
वही प्रेम है...!
बेटा माँ के बीमार पड़ते ही
अपने सारे काम ताक पर रख
सारी जिम्मेदारी स्वयं ओढ़
पिता को आश्वस्त करे
बहन को समझाए
वही प्रेम है...!
समय के झंझावातों से
संघर्ष करके भी जो न बिखरे
थपेड़ों के बीच से निकल कर निखरे
रूप बदल बदल कर
जीवन में बार बार आए
वही प्रेम है...!
बस वही प्रेम है...!!!!!

अभी तक अटका है

तेरी आँखों में
चमकते रंगों ने
भरा रंग
मेरी उदासियों में,
तेरे शब्दों से झरे
सुमनों ने
रची रंगोली
मेरे आँगन में,
तेरी हँसी ने
गुनगुनाए गीत
मेरे कानों में
कि उड़ने लगी
रंग-बिरंगी तितलियाँ
मेरे आसपास,
तेरी दी खुशियों से
हुआ भरा-पूरा
घर-आँगन मेरा,
लड़खड़ाई जब भी कभी
थामा तूने ही मुझे,
तुम मिले मेरे मीत!
दिन वह सुनहरा
अभी तक अटका है
मेरी सुधियों में वहीं-कहीं

कारण

जब प्रेम होता है
तो सिर्फ प्रेम होता है
और प्रेम का कोई
कारण नहीं होता,
तभी तो वह निश्छल
निस्वार्थ होता है
बच्चों सा हँसता है
झरने सा झरता है
परिंदों सा
मीलों लंबी उड़ान भरता है
अकारण गाता-नाचता है....!
प्रेम का यही शाश्वत रूप
हर युग
हर काल में अमिट लेख बन
अंकित हो जाता है....!!
कारण जब भी
पसरें हैं प्रेम के बीच
लहूलुहान हुआ प्रेम
बिना कुछ कहे चुपके से
कब चला जाता है
पता ही नहीं चलता
और पूरा जीवन
उसे ढूँढने में खोता चला जाता है.....!

क्या करूँ?

लिख कर
तेरा नाम
कागजों पर
कई बार मिटाया है
पर
दिल में धड़कते हो
धड़कन की तरह
उसका क्या करूँ?
तुझे भुलाने को
कैसे खुद से लड़ूँ?

पुकारो

अपने
अधरों से
मेरा नाम लेकर
एक बार पुकारो प्रिय!
सहस्त्रों धनक की
चमक मेरे नयनों में
तुम्हें न दिखे
तो कहना
प्रेम की इस नदी में
अब संग-संग बहना।

अनछुए अहसास

स्त्रियाँ
नहीं करती प्रेम
वो तो जीती हैं
प्रेम के अनछुए अहसास,
तभी तो
डूब जाती हैं
प्रेम समुद्र में धड़ाक से,
नहीं माँगती
कोई साक्ष्य प्रेम का
जीती हैं
निभाती हैं
अपना प्रेम
जीवन भर...!
पर बेईमानी
कतई सहन नहीं करती
स्त्रियाँ
प्रेम में...!!
और निकाल
बाहर करती हैं तुरंत
अपने हृदय से
जो उसका
केवल उसका
अपना घर है.....!!!

घर

अपने
घर के रंग
इतने गहरे होते हैं
कहीं भी घूम लो
कहीं भी कितना ही रह लो
कुछ दिन,
अपने घर पहुँचते ही
बाँहें फैलाए
जब लिपटते
बिछते हैं स्वागत में
तो और भी गहरे हो
समा जाते हैं आत्मा में,
बोलो,क्या यह प्रेम नहीं है...??

खाई

प्रेम की गहरी खाई में
गिरे बिना
प्रेम को जीना
उतना ही कठिन
जितना
बच्चा बने बिना
बच्चे का मन समझ पाना।

अब की बार

पल ख़ुशी के हों
चाहे छोटे या बड़े
जीने के लिए उन्हें
रह जायें न खड़े
जीने और मनाने का
अंदाज़ हो मस्ती वाला
बच्चों जैसा हो जाए
कुछ मस्त सा गड़बड़झाला
रूठे और मने हम
जाने कितनी बार
छोटी सी चॉकलेट
चलेगी लेकिन अब की बार।

स्मृतियाँ प्रेम की

ये गुलाब!
रखूँगी अपने
बिस्तर के साथ लगी
छोटी मेज पर
पानी से भरे
काँच के ग्लास में,
आते-जाते
दिखता रहे मुझे,
सूखने लगेगा जब
तब रख लूँगी
अपनी डायरी के
पन्नों के बीच...!
जानती हूँ
दूरियाँ बहुत
दुख देती है,
पर प्रेम की ये
छोटी-छोटी स्मृतियाँ
उस दुख को भी
हर लेती हैं
ले आती हैं मुस्कान
उन अधरों पर
जो तुमसे दूर होने पर
हँसना भूल गए हैं।

मैं हूँ ना!

उतार-चढ़ावों से भरी
ये बोझिल सी जिंदगी
उस समय रुई सी हल्की
लगने लगती है
जब थाम कर हाथ मेरा
धीरे से कहते हो
मैं हूँ न साथ...!
और मैं समझ जाती हूँ
यह प्रेम है....!!!

हथेली पर

तुमने लिखा
हथेली पर
उँगलियों से प्यार!
मैंने कहा
कुछ लाज से
रचें नव विश्वास!
तुमने लिखा
उमंगों की छमक
रहेगी आजीवन,
हमने किया
संकल्प लेकर
सर्वस्व समर्पण!
वो दिन,
वो कहे शब्द
वार, माह, वर्ष
लौटते हैं, देखते हैं
बोलते हैं, डोलते हैं
आसपास कुछ रुक कर
धीरे से कानों में रस घोलते हैं
और प्यार से कहते हैं
फिर आज
हथेली पर
उँगलियों से प्यार लिखो न।

गुलाब दिवस

आज
एक नहीं
दो नहीं
पूरे तीन गुलाब
लिए हैं मैंने
तीन रंगों के
अपने तिरंगे की सोच पर
सफ़ेद गुलाब
उन सबके लिए
जिनसे जान-पहचान कर
उमंगों की
पतंग लिए
साथ-साथ
उड़ना है मुझे
पीला गुलाब
उन सभी मित्रों के लिए
जिनकी मित्रता
आएगी लेकर उजास
भरी अमावस में
और लाल गुलाब
उस प्रेम के लिए
जो मैं
अपने माता-पिता
पति, बेटे और बेटी से

करती हूँ
ईश निर्मित
हर रचना से करती हूँ
चाहती हूँ
मेरा प्रेम सर्वव्यापी हो
सबमें मैं
और मैं सबमें होऊँ
इसी से
तीन रंग के
सफ़ेद,पीले और लाल गुलाब
संपूर्ण सृष्टि के लिए
उसे जानना है
मित्रता भी करनी है
और प्रेम करके
अनादि संगीत में
खोना है बस।

सफ़र जारी है मीत

आज
उभर आया है
आँखों के सम्मुख
चित्र हमारे सफ़र के आरंभ का
जहाँ से
हाथों में हाथ लेकर
चले थे हम
नेह- विश्वास को
आँचल में बाँध कर,
अपने स्वाभिमान
और आत्मविश्वास की
अमूल्य पूँजी के साथ
इस संकल्प को लिए
कि जीवन की
ऊबड़-खाबड़
पथरीली राहों पर
चलते हुए
लहूलुहान हो
कहीं गिरेंगे तो
एक-दूसरे का सहारा बन
फिर उठेंगे
चलेंगे साथ उम्र भर,
और जानते हो
जीवन में
वो दौर भी आया
जब टूट सकते थे आँधियों में
पर आत्मविश्वास
अंधेरों में भी
प्रकाश स्तंभ बना रहा
राह दिखाता रहा,
तभी तो
चुनौतियों के पर्वतों को
रौंदते हुए
पहुँचे हैं यहाँ तक
जहाँ दुनिया के तरकश के सारे तीर
चल कर हो चुके हैं नाकाम
धरती सुवासित है सुमनों से
नभ प्रकाशित है दिनकर से,
प्रकृति गुनगुना रही है
वही गीत आज भी
जिसे गुनगुनाते हुए
सफ़र आरंभ किया था
और आज भी
सफ़र जारी है मेरे मीत!
जारी रहेगा अंतिम साँस तक।

चढ़ती उमर का प्रेम

चढ़ती
उमर का प्रेम
बचपने से ही
किया जाये
तो ही अच्छा...
उसमें होते
मखमली
संगमरमरी सपने
टूट जाते
वक्त के थपेड़ों से
निचोड़ देते प्रेम
गीले कपड़ों को
सुखाने के
प्रयास की तरह,
टूटा, थका प्रेम
दम तोड़ देता है
गिरते सूखे
पत्तों की तरह
जिन्हें उठाने
कोई नहीं आता....!!!

कहाँ से!

प्रेम
जीवन में
बिना कुछ कहे
यूँ आ गया हठीला!
अचानक कहाँ से.....???
चलने लगा
साथ साथ मेरे
अपनी कहते हुए
बेधड़क, सजीला!
अचानक कहाँ से.....???
पकड़
हाथ मेरा
नटखट मेघ सा
लहराया मन में रंगीला!
अचानक कहाँ से.....???
छोड़ कर
लाज सारी
संग बूँदों के थिरकी
विस्तृत गगन में में शर्मीली!
अचानक कहाँ से.....!!!!!!!!!

मुक्ति धाम

कल
जब तुमने
मेरी हथेली को छुआ
तो लगा
सदियों से भटकती आत्मा
मानो पा गई मुक्ति धाम।

बिरवा

छोटी-छोटी नोंक-झोंक में
हमने कितना समय गँवाया
कितने अमोल थे वो बीते
पल अपना मन ये जान न पाया,
अब रोपेंगे हम बिरवा प्रेम का
काटेंगे सब उगे हुए बबूल
आज से, अब से, अभी-अभी से
हमें तुम्हारा प्यार कबूल।

कुछ तेरी :: कुछ मेरी

कुछ तेरी
कुछ मेरी सुनें
मिल कर
नए स्वप्न बुनें
सँग मिल
नई राह चुनें
रँग प्रीत के
मिल कर देखें
शब्द गीत के
मिल कर ढूँढें
गीत प्रीत का
मिल कर गाएँ
सुख-दुख सबके
कम हो जाएँ
तृप्त हुए लो
नदिया बन बहें।

मीत!

मीत!
एक समय ऐसा था जब
मेरी हर समस्या का
समाधान
तुम्हारी बाहों के घेरे में
मिल जाया करता था
बिना कहे ही,
उड़ जाते थे बादल दुखों के
बिन बरसे ही,
खिल उठते थे कमल खुशियों के
अकारण ही.....
पर सुनो
समस्याएँ आज भी हैं
मेरी बहुत सी
है बाहों का वो घेरा भी,
पर होता नहीं समाधान
अब बिना कहे....
क्यों कहना और
कहने का
सोचना पड़ता है मुझे!
है कोई समाधान?
सोचना तुम भी
मैं तो सोच ही रही हूँ.....!!

जोड़ियाँ

कहते हैं
बनती हैं जोड़ियाँ ईश्वर के यहाँ
आती तभी धरती पर
पति-पत्नी के रूप में..!
ईश्वर के वरदान सदृश
बंधे हैं जब इस रिश्ते में
तो आओ आज
कुछ अनुबंध कर लें...!!
जैसे हैं बस वैसे ही अपना कर
एक-दूजे को
साथ चलते रहने का
मन से प्रबंध कर लें....!!!
अपने "मैं" को हम में मिला कर
पूरक बनने का
दृढ़ संबंध कर लें.....!!!!
पति-पत्नी के साथ ही
आओ कुछ रंग बचपन के
कुछ दोस्ती के
कुछ जाने से
कुछ अनजाने से
आँचल में भर कर
इस प्यारे से रिश्ते को
और प्यारा कर लें.....!!!!!

आ रहा कोई

बजने लगी धुन नई
आ रहा कोई
सँवरने लगा है आसमाँ
आ रहा कोई
बहती नदी को थाम लो
आ रहा कोई
चलती हवा को भी कहो
आ रहा कोई
सर्दियों की धूप सुन तू
रहना जरा यहीं
आज कई दिन बाद मिलने
आ रहा कोई
पूछते-पूछते पता मेरा लो
आ गया कोई।

प्रेम यात्रा

लहरें उठती हैं मन के सागर में
कुछ इस तरह दिन रात
कि उन्हीं में उलझा
ये मन मेरा करता रहता हैं यात्रा
तेरे प्रेम की लहरों पर अविराम।

सुनना तो जरा

इच्छाएँ
जग रहीं हैं
नई धुन बन रही है
साथी सुनना तो जरा....!
प्रीत
कुछ कह रही है
नदी सी
बह रही है
साथी देखना तो जरा....!!
बातें
बनने लगी हैं
तुम्हें कुछ कहने लगी हैं
साथी सुनना तो जरा.....!!!
आँचल
उड़ने लगा हैं
हवाओं संग
वो देखना
साथी पकड़ना जरा.....!!!
गीत
गाने को मन
नृत्य करने को मन
साथी समझना तो जरा.....!!!!

करवाचौथ पर

मीत!
सुना तुमने..?

बन रहा
इस बार
विशेष संयोग
सत्ताइस वर्षों बाद
इस करवाचौथ पर....!

मिलेंगी जब
अमृत सिद्धि
और स्वार्थ सिद्धि
देंगी विशेष फल
हर सुहागिन को....!!

लगता
हर दिन ही
मुझे करवाचौथ सा
जब से मिले तुम
मुझे मीत मेरे!

ये मेरा
सजना-सँवरना
है सब कुछ तुम्हीं से
राग-रंग
जीवन के
हैं सब तुम्हीं में....!!!

पूजा कर
जब चाँद देखेंगे
छत पर
हम दोनों
मिलकर
माँगेंगे आशीष
हम चंद्रमा से
सदा यूँ ही
पूजा कर
निहारे उसे
हर करवाचौथ पर.....!!!

सुनो चाँद!

सुनो चाँद!
आज कुछ
कहना चाहती हूँ तुमसे
ये पर्व मेरे लिए
उस निष्ठा और प्रेम का है
जिसे जाना-समझा
अपने माता-पिता को देख कर मैंने
कि प्रेम और संबंध में
कभी दिखावा नहीं होता
होता है तो बस
अनकहा प्रेम और विश्वास
जो नहीं माँगता
कभी कोई प्रमाण चाहत का....!
मैं
तुम्हारे सम्मुख
अपने चाँद के साथ
कहती हूँ तुमसे..,
मुझे प्यारा है
अपने मीत का
अनकहे प्रेम-विश्वास का
शाश्वत उपहार
अपने हर करवाचौथ पर....!
तुम सुन रहे हो न चाँद.....!

प्रेम में डूबी स्त्री

प्रेम में डूबी स्त्री
प्रेम तो टूट कर
करती है पर
क़ैद नहीं होना चाहती
प्रेमी की बंदिशों में

अटका है..!

मेरी प्रियतमा!
कहना चाहता हूँ आज तुम्हें
अपने हृदय की बात...,

सुनो!
आज भी मुझे याद है
पहला करवाचौथ
जब हम यात्रा के मध्य थे,
स्टेशन पर रेल से उतर कर
चाँद को अर्ध्य दिया था तुमने...!

वो सादगी भरा मोहक रूप
पहले करवाचौथ का
आज भी मेरी आँखों में वैसा ही बसा है...!!
मेरा हृदय
सच कहूँ तो आज भी वहीं
करवाचौथ के चाँद के साथ
तुम्हारी उसी भोली सी सादगी पर अटका
स्टेशन पर अब भी वहीं खड़ा है....!
सुन रही हो न तुम मेरी प्रियतमा....!

वह उड़ना चाहती है
प्रेम में अपनी शर्तों पर
वह गुनगुनाना चाहती है
अपनी लय पर
कुलाँचे भरना चाहती है
अपनी गति और वेग से
जहाँ प्रेम भी

शर्तों की क़ैद में
करना पड़े
वहाँ प्रेम नहीं रहता
रहती हैं केवल मजबूरियाँ
जो कभी न कभी दम तोड़ती हैं
कर देती हैं
स्त्री के प्रेम को मुक्त
स्त्री अपनी शर्त पर
कर सकती है प्रेम
क़ैद होकर नहीं।

तुम!

ईश के
वरदान से
तुम मिल गए हो
जीवन में
बगिया के
गुलाब से
तुम खिल गए हो
जीवन में
पानी में
नमक से
तुम मिल गए हो
नैनों से अश्रु बन कर
ढुलक रहे हो
हरी घास पर
ओस-कणों से
चमक रहे हो
पूजा की
आरती से
गुंजित हो रहे हो
सूर्य के
अप्रतिम प्रकाश से
तुम दमक रहे हो जीवन में।

चढ़ती उमर का प्रेम

वो दिखी
भीगती हुई
बारिश में
पहली बार,
जाने क्या था
उसमें या बारिश में
देखते ही
प्यार हो गया
ये बात अलग
उसे कुछ न कहा
न तब, न अब
पर, प्यार है तो है।

भीगना

भीगना
बारिश में या प्रेम में
एक ही तो है
एक में तन भीगता
दूजे में मन
दोनों स्थितियों में
मन प्रसन्न!

विश्वास

यदि है
विश्वास साथी!
तो प्रीत में
क्या दूरियाँ/
नजदीकियाँ
तब तो
पंथ सरल है
अमृत बना
सब गरल है।

टटोलें

प्रेम में
स्पर्श,
आलिंगन की
उष्णता के मध्य
लगने लगें
फासले और दूरियाँ
तो मन को टटोलें
कहीं मार्ग तो नहीं
भटक गया मन!

तू और मैं

तू प्रेम का राग
मैं प्रेम की रागिनी
तू मन का भाव
मैं मन की भाविनी
तू गगन का तेज
मैं धरा की दामिनी
तू गगन का चाँद
मैं धरा की चाँदनी
तू प्रेम की अगन
मैं प्रेम की तारिणी
तू प्रेम की प्यास
मैं प्रेम वर्षा दायिनी
तू प्रेम का दान
मैं प्रेम की धारिणी
तू प्रेम का गीत
मैं प्रेम की गायिका
तू प्रेम का नायक
मैं प्रेम की नायिका
तू प्रेम का बीज
मैं प्रेम की पालिका

ढाई अक्षर

पढ़े हैं सिर्फ ढाई अक्षर
मैंने प्रेम के
तभी तो हर युग में
रूप और नाम
बदल कर मैं आती रही हूँ
और तुम भी तो
उसी ढाई अक्षर की
पढ़ाई के आगे
भूल कर सब कुछ
मेरा अनुकरणकरते रहे हो....!

सुनो!
प्रेम में बहुत कहना
सुनना नहीं होता
होता है बस
उन ढाई अक्षर के
संगीत की स्वर लहरियों पर
मिल कर नृत्य करना....!!

पता है न!
प्रेम में अपनी सुधबुध नहीं रहती...!!!
मुझे तो नहीं क्या तुम्हें है?

प्रेम में शब्द

सुनो!
तुम सदा
वही क्यों सुनते
जो मैं कहती हूँ ,
क्यों नहीं सुनते
जिसे कहना चाहती हूँ
पर कह नहीं पाती...!
कहा गया कम सुना
समझा जाए तो अच्छा,
अनकहा अधिक गुना
सुना-समझा जाए
तो अधिक अच्छा...!!
जो कहा जाता
मन का कम
बाहरी अधिक होता है
तभी तो चोट पहुँचाता है
जो नहीं कहा जाता
वो मन का होता है
पर, मन तक पहुँचता नहीं...
सुनो!
इन शब्दों के कहने-सुनने के
फेर में पड़ें ही क्यों?
प्रेम में शब्द कहाँ होते हैं.....!

समुद्र

वो
कौन सी चुंबकीय शक्ति
है तुम्हारे पास
जो हर बाधाओं को
तोड़ती-ओढ़ती
सुगम-दुर्गम पथों पर
अविराम बढ़ती हुई हर नदी
तुम में हर्ष से समा कर
करती है अपनी यात्रा का अंत!
और तुम भी
अपनी बाँहें फैलाए
स्वीकारते हो उनका
स्नेहिल समर्पण!
प्रेम का
यह आत्मिक पावन स्वरूप
तुम और तुम्हारी प्राण प्रियाएँ ही
समझ सकती हैं
रे! प्रेमी समुद्र!
कहने में सरल
करने में कठिन
प्रेम की यह अनबूझी सी
परिभाषा कभी
मानव को भी समझाना..!!

प्रेम कभी नहीं मरेगा

अहं ने
उठा लिया है
अपना सिर इतना
कि बैठ ही गया
मनुष्य के सिर चढ़ कर
हर ली है उसके
सोचने-समझने की शक्ति
तभी तो
अपने- अपने
कमरों के दरवाजे बंद कर
छिपा रहता है मोबाइल में
ऊबता है तो
बीच-बीच में
दूरदर्शन खोल लेता है
इनसे जब थकता है
तो कमरे से निकल
दरवाजे पर ताला लगा
घूमने बतियाने
निकल जाता है
रास्ते से भटका अहं
हत्या कर रहा है
उस प्रेम की
जो सदानीरा बन
बहता था
अट्टालिकाओं के मध्य से
पर
स्मरण रख
मानव!
तेरा अहं
कितना भी चाहे
प्रेम कभी नहीं मरेगा
गिरना और मरना
तो अहं को ही पड़ेगा।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माँ	- श्रीमती कमला वर्मा
पिता	- बाबूराम वर्मा
जन्म स्थान	- देहरादून (उत्तराखण्ड)
जन्मतिथि	- 04 अक्टूबर 1957
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)
जीवन संगी	- श्री राकेश आनंद बौड़ाई
संतान	- दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)
व्यवसाय	- 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।
संप्रति	- स्वतंत्र अध्ययन और लेखन
निवास स्थान	- ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001
फोन नं.	- 9759252537
मेल आई.डी.	- bharati.bourai007@gmail.com
प्रकाशित एकल पुस्तकें	- (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985 (2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998 (3) सृजन समीक्षा 2018, (4) उपहार (काव्य संग्रह), (5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह) (6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह), (7) आखर मीत (काव्य संग्रह) (8) पगडंडियों पर चलते हुए (लघुकथा संग्रह)
प्रकाशित साक्षा संग्रह	- 18 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित
पत्र पत्रिकाएं	- लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान	- वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 12 सम्मानों से सम्मानित, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान 2019।
सामाजिक क्षेत्र	- अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-93-2

मूल्य- 60/-